अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

सुदामा पांडेय धूमिल के काव्य में सामाजिक चेतना

रवि कुमार

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गौड़ ब्राह्मण डिग्री कॉलेज, रोहतक

साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है क्योंकि एक कवि या लेखक अपने साहित्य के माध्यम से समाज का चित्रण जाने-अनजाने अवश्य करता है। समाज का होना व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक है अर्थात हम मान सकते है कि समाज से मानव अपनी विभिन्न जरूरतों एवं अपने महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति करता है। समाज एक महत्तवपूर्ण संस्था है, जिससे व्यक्ति मानसिक व सांस्कृतिक रूप से उन्नतिशील हो सकता है। समाज के द्वारा ही व्यक्ति अपना जीवन सुव्यवस्थित रूप से व्यतीत कर सकता है। समाज को भावों का, सिंद्धातों का, जनता की सामाजिक भावनाओं का और रीति-रिवाजों का योग मान सकते हैं क्योंकि समाज में जो नीति-नियम व सिद्धांत बनाए जाते है वो जनता की भावनाओ को ध्यान में रखकर ही बनाए जाते हैं। एक समाज में लगभग रीति-रिवाज और रहन-सहन एक जैसा होता है, श्याम सुंदर दास द्वारा सम्पदित कोश में समाज का अर्थ - (1) समूह/संघ/गिरोह, दल (2) सभा (3) एक ही स्थान पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करने वाले वे लोग जो मिलकर अपना एक अलग समूह बनाते हैं। समुदाय - जैसे शिक्षित समाज, ब्राहमण समाज (4.) वह संस्था जो बहुत से लोगों ने एक साथ मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित की हो, जैसे-सभा, संगीत, समाज, साहित्य समाज (5) प्राचर्य - समुचय संग्रह (6) एक प्रकार का गृहयोग (7) मिलना-एकत्र होना आदि है।1

कूल के द्वारा दी गई समाज की परिभाषा - ''समाज रीतियों या प्रक्रियाओं का एक जटिल ढाँचा है, जोकि जीवित है और एक - दूसरे के प्रभाव के कारण आगे बढ़ता रहता है एवं पूर्ण अस्तित्व में इस प्रकार की एकता पायी जाती है जो कुछ भाग में होता है वह शेष पर प्रभाव डालता है।''2 कवि का यह कत्र्तव्य होता है कि वहा अपनी कविताओं के माध्यम से समाज के गुणों व अवगुणों को दर्शाता है जिससे जनता जागृत हो सके।

धूमिल की कविता में व्यक्त आम आदमी स्वभाविक गुण व दोषों से युक्त है तथा वहीं आम आदमी जटिलताओं और षड्यंत्रों से भरे युग में जीने को विवश है। धूमिल का काव्य सामाजिक उत्पीडन की कहानी को प्रस्तुत करता है। धूमिल ने अपने काव्य के प्रमुख पात्र भी आम आदमी को ही बनाया है। जिसके लिए समाज के रीति-रिवाज ना चाहते हुए भी उन्हें अपनाने को मजबूर है। जब समाज में समय के साथ पारिवर्तन नहीं होता तब समाज का विकास एक प्रकार से रूक जाता है और आम आदमी पर इसका सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है क्योंकि उन रुढ़ियों से बंधे रहना आम आदमी की विवशता बन जाती है। उनसे बाहर निकलने के लिए वह कुछ नहीं कर पाता और चुपचाप उन्हें सहन करते रहना पड़ता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

‘‘अब कोई शब्द छोटा नहीं पड़ रहा है:
लेकिन तुम चुप रहोंगे
तुम चुप रहोगे और लज्जा के
उस निरर्थक गूँगेपन-से सहोगे-’’3

अपनी भौतिक वस्तुओं के लालच में और अपनी स्वार्थी पूर्ण नीति के कारण व्यक्ति आज कुछ भी गलत कार्य करने तक को तैयार हो जाता है। समाज के विचारों पर एक प्रकार से काई सी जम गई है जिसके कारण एक व्यक्ति के स्वयं के पैर तक टिकने भी मुश्किल हो मुश्किल हो गए है धूमिल ने समाज के इस बदलते स्वरूप पर स्पष्ट रूप से जनता के सामने रख दिया है। उन्होंने समाज को भीड़ का नाम देते हुए कहा है -

‘‘भीड़, के खिलाफ रूकना
एक खूनी विचार है।
क्योंकि हर ठहरा हुआ आदमी
एक हिंसक भीड़, का
अन्धा शिकार है’’4

धूमिल की कविताओं से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने समाज में फैल रही बुराईयों को नष्ट करने व जनता को जागृत करने की बीड़ा उठा रखा था। गरीब-अमीर का भेद, कर्म का विभाजन और जातियता को तो उन्होंने समाज का कैंसर माना है जो जनता में फैलता ही जा रहा है और जिसके अंदर इसका संक्रमण होता है। वह ठीक ही नहीं हो पाता अर्थात् फिर वह इन सबसे उभर नहीं पाता। धूमिल का मानना उचित है कि लोगों में सामाजिक अंसतोष है और जिसका प्रमुख कारण सामाजिक अनुभवों व सामाजिक रीति-रिवाजों से उत्पन्न मानसिक पीड़ा का अंर्तद्वद्व है। जिसके कारण लोगों को समाज में रहना भी मुश्किल व फाँसी के फंदे के समान लगता है। इनके सबके कारण मनुष्य अपने भीतर-ही-भीतर लड़ता रहता है।

‘‘बाहर आजादी से
और भीतर अनाज से लड़ता है।
आगाह करो उन्हें कि यह सुकने की लज्जा नहीं
सिर्फ चैखट की ऊंचाई भूल जाने की चोट है।’’5

समाज के भ्रष्ट स्वरूप को देखकर धूमिल का हृदय वेदना से व्यथित हो जाता है। ईमानदारी से तो कोई जीना ही नहीं चाहता। सभी अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे रहते है। स्वार्थ पूर्ति के लिए, उन्हें जो कुछ भी करना पड़ता है वो सब कर लेते है इसके लिए वो यह तक नहीं सोचते कि सामने वाले इंसान को इससे कितना दुःख

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

होगा या इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? धूमिल अपनी कविताओं के माध्यम से इस अन्याय के विरुद्ध समाज को आइना दिखाते हुए लिखते हैं-

‘‘हर इनाम का एक चोर दरवाजा होता है
जो संडास की बगल में खुलता है
दृष्टियों की धार में बहती नैतिकता का
कितना भद्दा मजाक है
कि हमारे चेहरों पर
आँखों के ठीक नीचे ही नाक है।’’6

इससे स्पष्ट है कि बाहर से ईमानदार दिखने वाले लोगों के मन में कहीं-न-कहीं चोर होता है जो केवल अपने स्वार्थ के लिए बेईमानी करता है और ये सब समाज में नैतिकता जैसे शब्दों का अपमान ही है। एक तो समाज में धन संपत्ति के लिए लोगों में प्रतियोगिता सी बनी हुई है। अर्थ के आधार पर समाज दो वर्गों में बंट चुका है। एक गरीब वर्ग और दूसरा अमीर वर्ग धूमिल की कविताओं में आर्थिक संघर्षो के हाशिए काफी चैड़े है जिसके परिणाम स्वरूप धूमिल ने आर्थिक विषमता की मार को झेलते सामान्य जनों की दयनीयता से भरी जिंदगी को अपनी कविताओं के माध्यम से उभारने का प्रयास किया ताकि समाज इसके प्रति जागृत हो सके। समाज का आर्थिक असंतुलन गरीब व्यक्ति की पहचान तक को भी छीन लेता है क्योंकि समाज में ज्यादा सम्मान उसी को दिया जाता है जिसके पास पैसा ज्यादा होता है। आर्थिक विषमता के कारण एक वर्ग के पास तो जरुरता से भी ज्यादा नौतिक सुख सुविधाएँ तो और दूसरे अर्थात गरीब वर्ग के पास जरूरत की भौतिक सुविधाएँ नहीं है। धूमिल ने समाज में बिगड़ते अर्थ संतुलन को आतंक की पहल मानते हुए लिखा है-

’‘जादुई आंतक के साथ
जहाँ व्याकरण भाषा की सारी सम्भावनाएँ
खो चुकी है
और अर्थशास्त्र एक पौसरे में
बदला गया है।‘‘7

इस भौतिकवादी युग में अर्थवाद में जकड़ा मानव मन मनुष्यता की सीमाएँ भी लांघ गया है क्योंकि अर्थ प्राप्ति के लिए व्यक्ति बड़े से बड़ा अपराध भी करने को तैयार हो जाता है।

अर्थ के कारण उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग का अंतर लगातार बढ़ता जा रहा है और यह अंतर आम आदमी के जीवन में जहर घोलने जैसा है

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

‘‘मलाल इस कदर सहने की सीमा के पार हो
कि आदमी
चाकू की वहशत के खिलाफ
दूसरा चाकू उठा लें
और जंगल के साथ
कहीं ऐसा न हो कि
घास की मासूमियत
जोश की रहजनी का शिकार हो
कहीं ऐसा न हो कि पत्तों को जुबान में
जहर भर जाए
और पेड़ों में फूल दोबारा न आए।‘‘8

आर्थिक संकट को लेकर धूमिल की चिंता अनेक रूपों में उभर कर आई है। उनकी कविताओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी यह चिंता केवल भावात्मक आवेश मात्र नहीं है। बल्कि अर्थ व्यवस्था पर एक बार फिर से से विचार करवाने का निश्चय है। आर्थिक विषमता का संकट आम आदमी की रोजी रोटी पर पड़ता है। इसको अभिव्यक्त करते हुए धूमिल ने लिखा है।

‘‘बडकू को एक
छोटकू को आधा
घर बत्ती बाल किशन को आंधे में आधा
कुल रोटी छै
और तभी मुँहदुब्बर
दरबे में आता है। - खाना तैयार है?
उसके आगे थाली आती है
कुल रोटी तीन
खाने से पहले मुंह दुब्बर
पेट भर
पानी पीता है और लजाता है
कुल रोटी तीन
पहले थाली खाती है
फिर वह रोटी खाता है।‘‘9

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

धूमिल ने समाज में आर्थिक संकट के साथ-साथ समाज में फैल रही साम्प्रदायिक बुराइयों का भी चित्रण-किया हैं। पूरे देश में व समाज में धर्म एक ऐसा महत्तवपूर्ण मुद्दा बना हुआ है जिसके कारण देश की संस्कृति के साथ-साथ राजनीति पर भी प्रभाव पड़ता है। राजनेता चुनाव में सफल होने के लिए साम्प्रदायिक संघर्षों को खुलेआम करवाते है। साम्प्रदायिक तत्वों की सक्रियता या साम्प्रदायिक संघर्ष अन्य दोषों के मुकाबले कुछ ज्यादा ही है। अशांति का पर्याय बनी साम्प्रदायिकता अगर कहीं बौनी पड़ती है तो वह है वौदिक चेतना के स्तर पर, धूमिल की वैचारिकता साम्प्रदायिकता की राजनीतिक परिभाषा समझने की कोशिश करता है कि कैसे अहिंसा की पैनी तलवार सत्तारूढ़ शक्ति का गला काटती है:-

‘‘लेकिन मुझे लगता है कि एक विशाल दलदल
के किनारे बहुत बड़ा अधमरा पशु पड़ा है।
उसकी नाभि में एक सड़ा हुआ घाव है
जिससे लगातार है - भयानक बदबूदार मवाद
बह रहा है
उसमें जाति और धर्म और सम्प्रदाय और
पेशा और पूंजी के असंख्य कीड़े
किलबिला रहे हैं और अन्धकार में
डूली हुई पृथ्वी
पता नहीं किस अनहोनी की प्रतीक्षा में।
इस भीषण सड़ाव को चुपचाप सह रही है।‘‘10

जाति, धर्म के आधार पर देशों तक का विभाजन भी हो जाता है समकालीन युग पर धूमिल की पकड़ मजबूत थी। शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जिस पर धूमिल की पकड़ ना हो। समाज धर्म, अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति आदि का चित्रण उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से किया है।

समाज को जागृत करने के लिए धूमिल ने इन सभी क्षेत्रों को दोनों पक्षों को ही लिया है। वैसे तो आजकल लगभग सभी क्षेत्रों में नकारात्मक पक्ष ही ज्यादा देखने को मिलते है जैसे अगर बात करें शिक्षा की तो शिक्षा हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

समाज और देश को जागरूक करने का सबसे अच्छा माध्यम शिक्षा ही है। शिक्षा से ही मनुष्य को चरित्र का निर्माण होता है, लेकिन आधुनिक समाज में शिक्षा भी एक व्यवसाय ही बन चुकी है। अमीर घरों के बच्चे पैसा देकर उच्च पदों को अपने नाम कर लेते है और इसी कारण से मेहनत करने वाला बच्चा पीछे रह जाता है। धूमिल में इसका चित्रण करते हुए लिखा है:-

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

‘‘सबसे अच्छे मस्तिष्क
आराम कुर्सी पर
चित्त पड़े है।’’11

शिक्षा व्यवस्था के इस असंतुलन के कारण इसका सबसे ज्यादा प्रभाव युवा वर्ग पर पड़ता है। शिक्षित होने पर भी उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार कार्य नहीं मिल पाता आम आदमी अर्थात् निम्न व मध्यम वर्ग पर तो कुछ ज्यादा ही प्रभाव पड़ता है। धूमिल ने आम आदमी की समस्याओं को उठाया है। पैसे के लिए और समाज में परिस्थितियों से लड़ते आम आदमी को धूमिल ने ‘एक जोड़ी जूते‘ के समान बताया है।

धूमिल ने जहाँ शिक्षा व्यवस्था में असंतुलन, अर्थव्यवस्था में असंतुलन आम आदमी की दयनीय स्थिति समाज में बढ़ती अराजकता का चित्रण किया है वहीं धूमिल ने समाज में बढ़ती साम्प्रदायिकता का चित्रण भी अपने काव्य के माध्यम से किया है। आधुनिक युग में तो साम्प्रदायिक चुनावों के लिए हथियार बनी हुई है कई बार तो चुनाव जीतने के लिए राजनेता साम्प्रदायिकता की आग को बढ़ावा देते हैं। कई बार सत्तारूढ़ पार्टी या विरोधी पार्टी किसी भी दूसरी पार्टी को नीचा दिखाने या जनता की नजरों में गिरने के लिए साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं। धूमिल ने इसको चित्रित करते हुए लिखा हैः-

‘‘और... और वह देखो कि- आडड है
प्रान्तीयता का चेहरा लगाए हुए
कोई घुसपैठिया है?
और वह देखो वहाँ -
वे तैष-भेर चेहरें’’12

संसार में कई देश तो ऐसे हैं जो साम्प्रदायिकता की आग में जलकर अलग हुए हैं। उदाहरण के तौर पर भारत-पाकिस्तान को ले सकते हैं। अंग्रेजों ने हिंदू और मुस्लमानों के बीच इस प्रकार साम्प्रदायिकता की आग लगाई कि भारत का विखण्डन हो गया। उस समय भारत पर अंग्रेजों की सŸाा थी। अब भारत आजाद हो चुका है लेकिन सम्प्रदायिक दंगे देश में फिर भी ऐसे ही हो रहे है और ये साम्प्रदायिक दंगे केवल चुनाव के लिए ही नहीं होते बल्कि कई बार तो धर्म के उन ठेकेदारों के द्वारा भी करवाएं जाते हैं जो केवल अपने धर्म की स्थापना के लिए लोगों को धर्म का गलत अर्थ बताकर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं। धूमिल ने ऐसे लोगों को लोगों का बर्बर जुलूस कहा है-

‘‘मैंने अहिंसा को
एक सत्तारूद शब्द का गला काटते हुए देखा

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 1, जनवरी – मार्च 2025

मैं यह सब देख ही रहा था कि एक
रेला आया उन्मत लोगों का बर्बर जुलूस
वे किसी आदमी के हाथों पर गठरी की
तरह उछाल रहे थे
उसे एक - दूसरे से छीन रहे थे। उसे घसीट रहे थे''13

स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि धूमिल की तत्कालीन समाज पर पकड़ मजबूत थी। धूमिल ने समाज में फैली बुराइयों और समाज के लोगों को जागरूक करने के लिए अपने काव्य को माध्यम बनाया। यहीं नहीं उन्होंने समकालीन विविध पहलुओं को अपनी संवेदना के सहारे वाणी प्रदान की है उनकी कविताओं में परिवर्तित मानवीय सम्बन्धों के बदलते सन्दर्भों का खुलासा हुआ है। धूमिल की सामाजिक चेतना, समाज की पीड़ा, संवेदना, छुए-अनछुए पहलू समान रूप से झलकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

[1]. स. श्यामसुंदर दास, हिन्दी शब्द सागर, दसवां भाग, नागरी मुद्रण वाराणसी, 5 संस्करण 1968, पृ. 4968
[2]. भूले, सी. एच.द. सोशल प्रोसेजा, पृ. 28
[3]. धूमिल, संसद से सड़क तक, (जनतंत्र के सूर्योदय में) राजकमल प्रकाशन पृ. 1972
[4]. धूमिल, संसद से सड़क तक (पटकथा), राजकमल प्रकाशन पृ. 122
[5]. धूमिल, सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र (निहत्थे आदमी से कहा), वाणी प्रकाशन पृ. 87
[6]. धूमिल, संसद से सड़क तक, (सच्ची बात), राजकमल प्रकाशन, 2 लव 77-78
[7]. धूमिल, सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र, (शिविर नम्बर, तीन), वाणी प्रकाशन, पृ. 65
[8]. धूमिल, सुदामापांडेय का प्रजाता, (जनतंत्र: एक हत्या संदर्भ), वाणी प्रकाशन, पृ० 70
[9]. धूमिल, कल सुनना मुझे, (किस्सा जनतंत्र), वाणी प्रकाशन, पृ. 52
[10]. धूमिल, संसद से सड़क तक (पटकथा), राजकमल प्रकाशन, पृ. 18
[11]. धूमिल, कल सुनना मुझे, (एक कविता: कुछ सूचनाएं), वाणी प्रकाशन, पृ० 694
[12]. धूमिल, संसद से सड़क तक (भाषा की रात), राजकमल प्रकाशन 12, पृ० 94
[13]. धूमिल, संसद से सड़क तक (पटकथा), राजकमल प्रकाशन, पृ. 119